कथा सरिता

दया भावना

महात्मा गांधी ने कहा है, 'दया धर्म का मूल है और मानवीय गुणों का श्रृंगार है।' दया भावना के बारे में पंडित मदन मोहन मालवीय के जीवन की एक घटना है - एक महिला दीन-हीन अवस्था में घायल होकर सड़क के एक ओर पड़ी कराह रही थी। उसके पास ही उसका शिशु भूख के मारे लगातार रोये जा रहा था। अनेक लोग उधर से गुजर रहे थे, लेकिन दो मिनट रूककर उसको दिलासा देने वाला कोई नहीं था। वहां से गुजरने वाला हर व्यक्ति इतना ही कहता, 'न जाने कौन है?'

और आगे निकल जाता। तभी एक बग्घी उधर से निकली और महिला के कराहने का स्वर सुनकर उसके निकट जा रूकी। एक व्यक्ति नीचे उतरा और जल्दी-जल्दी चलकर उस महिला और शिशु को उठाया और बग्घी में ला बैठाया। उसने कहा, 'कोचवान! बग्घी अस्पताल की ओर मोड़ लो।' लेकिन, आपको तो समारोह में जाना है, वहां विलंब हो जायेगा।' कोचवान ने झिझकते हुए कहा। 'अरे भाई! समारोह से ज्यादा आवश्यक मानव सेवा है। तुम बग्घी को अस्पताल की ओर मोड़ो।' कोचवान चुप हो गया और कुछ ही देर बाद बग्घी अस्पताल के बाहर खड़ी थी। उस व्यक्ति ने महिला को अस्पताल में भर्ती करा दिया। करीब आधा घंटे बाद महिला की स्थिति कुछ सुधरी, तो उस व्यक्ति ने उसे कुछ रुपये दिए और बग्घी में बैठकर समारोह में भाग लेने चला गया। वह व्यक्ति अन्य कोई नहीं, पंड़ित मदन मोहन मालवीय थे।

पत्रकार ने हेनरी फोर्ड को बताए सच्ची मित्रता के गुर

प्रख्यात उद्योगपति हेनरी फोर्ड ने जीवन में वह सब कुछ प्राप्त किया, जिसका सपना हर व्यक्ति की आँखों में पलता है। धन, दौलत, सुख-समृद्धि, ऐश्वर्य की विराटता और अपार यश। ये सब हेनरी फोर्ड की कमाई थी। जब वे अपनी समृद्धि और कीर्ति के शिखर पर थे, तब एक दिन एक पत्रकार ने उनसे पूछा - महोदय! आपने अपने जीवन में प्रचुर धन-संपत्ति के साथ यश और गौरव कमाया है। आपके सौजन्य से अनेक महान् कार्यों का संपादन हुआ है। सारी दुनिया आपकी सफलता को सलाम करती है। इतना

सब कुछ होने के बाद क्या आपको अब भी जीवन में किसी कमी का अनुभव होता है? हेनरी फोर्ड तत्काल बोले - हाँ, मेरे जीवन में सच्चे मित्र की कमी मुझे रह-रहकर सालती है। यदि मुझे फिर से जीवन आरंभ करना हो तो मैं सच्चे मित्रों की तलाश करूंगा। भले ही इसके लिए मुझे अपना सारा धन क्यों न खोना पड़े। यह सुनकर पत्रकार ने कहा - यदि आप ऐसा करें तो आपको मित्र ही मित्र मिल जायेंगे, किंतु सच्चा मित्र तब भी नहीं मिलेगा। फोर्ड द्वारा कारण पूछे जाने पर वह बोला - क्योंकि

आप केवल धन के बल पर मित्रों की तलाश करना चाहते हैं। धन से सच्चे मित्र नहीं मिलते, उसके लिए अहंकार को गलाना पड़ता है। स्वयं को संपूर्णत: देना पड़ता है, समर्पित होना होता है। धन से संसार की हर चीज खरीदी जा सकती है, किंतु सच्चा मित्र नहीं। फोर्ड को अपनी भूल का अहसास हुआ। कथा का सार यह है कि सच्ची मित्रता सात्विक हृदय की शुद्ध भावनाओं पर टिकी होती है। अत: सच्चा मित्र पाने के लिए जेब नहीं, दिल को संपन्न और उदार रखें।

अंत समय

एक साहूकार था। उसने जीवन भर खूब पैसा कमाया। हर दिन वह इसी प्रयास में रहता था कि उसका धन दिन-दूना-रात चौगुना बढ़ता रहे। इस प्रयास में उसे सफलता भी खूब मिली। वह नगर का सबसे धनाढ्य व्यक्ति बन गया। लोग उसके बारे में चर्चा करते रहते थे। वह भी अपने ऐश्वर्य पर फूला नहीं समाता था। किन्तु, आखिर वह दिन आ ही गया, जो एक-न-एक दिन सबके जीवन में अनिवार्य रूप से आता है। वह बीमार पड़ा। बीमारी बढ़ती गई और डॉक्टरों ने कह दिया कि वह अब कुछ ही देर का मेहमान है। पिता की मृत्यु समीप देखकर पुत्रों ने कोशिश की कि वे भगवान का नाम लें और संसार का मोह छोड़ें। उन्होंने पिता से भगवान का नाम लेने के लिए कहा। किन्तु, पिता चाहते हुए भी भगवान का नाम न ले सका। वह कोशिश करके हार गया, किन्तु मन से संसार को नहीं निकाल सका। आंगन में बछड़ा बुहारी खा रहा था। उसे बड़ा दु:ख हुआ। घर का कोई आदमी यह नहीं देखता कि कितना नुकसान हो रहा है। वह बोला ब... भा...। लड़कों ने समझा किसी छिपे धन का पता बताना चाहता है। उन्होंने कीमत वाला इंजेक्शन लगवाकर पिता से यह जानने की कोशिश की कि वह क्या कह रहा है? पिता ने कहा - बछड़ा बुहारी खा रहा है। तुम्हें जरा भी चिंता नहीं...। कहते-कहते उसने प्राण छोड़ दिए। चाहते हुए भी राम का नाम नहीं ले सका। कई लोग सोच लेते हैं कि पूरी उम्र कमाएं और अंत समय में भगवान का नाम लेकर अपना कल्याण कर लेंगे, लेकिन यह अंत समय आता है, तब हरिभजन के लिए समय नहीं रह पाता है। समय निकल जाता है, शरीर साथ छोड़ देता है। अंत समय में भी उसे धन और धन संरक्षण की चिंता सताती रहती है, लेकिन अपने कल्याण के लिए जुबान पर भगवान का नाम चाहकर भी नहीं आता है। व्यक्ति को जीते जी परोपकार के काम कर लेने चाहिए।

लोक-कल्याण ज्ञान ही सार्थक

एक दिन एक व्यक्ति किसी संत के पास पहुंचा। वह बहुत अधिक तनाव में था। अनेक प्रश्न उसके दिमाग में घूम-घूमकर उसे परेशान कर रहे थे - जैसे आत्मा क्या है? आदमी मृत्यु के बाद कहां जाता है? सृष्टि का निर्माता कौन है? स्वर्ग-नर्क की अवधारण कहां तक सच है और ईश्वर है या नहीं? उसे इन प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल रहे थे। जब वह संत के पास पहुंचा तो उसने देखा कि संत को कई लोग घेरकर बैठे हैं। संत उन सभी के प्रश्नों व जिज्ञासओं का समाधान अत्यंत सहज भाव से कर रहे हैं। काफी देर तक यह क्रम चलता रहा, किन्तु संत धैर्यपूर्वक हर एक को संतुष्ट करते रहे। बेचारा व्यक्ति यहां का हाल देखकर परेशान हो गया। उसने सोचा कि संत हैं, इन्हें दुनियादारी के मामलों में पड़ने से क्या लाभ? अपना भगवद् भजन करें और बुनियादी समस्याओं से ग्रस्त इन लोगों को भगाएं, किन्तु संत का व्यवहार देखकर तो ऐसा लग रहा था मानो इन लोगों का दु:ख उनका अपना दु:ख है। आखिर उस व्यक्ति ने पूछ ही लिया, महाराज आपको इन सांसारिक बातों से क्या लेना-देना? संत बोले - मैं ज्ञानी नहीं हूँ, त्यागी हूँ और इंसान हूँ। वैसे भी वह ज्ञान किस काम का, जो इतना घमंडी और आत्मकेंद्रित हो कि अपने अतिरिक्त दूसरे की चिंता ही न कर सके? ऐसा ज्ञान तो अज्ञान से भी बुरा है। संत की बातें सुनकर व्यक्ति की उलझन दूर हो गई। उस दिन से उसकी सोच व आचरण दोनों बदल गए। कथा का सार यह है कि ज्ञान तभी सार्थक होता है, जबकि वह लोक-कल्याण में संलग्न हो।

सिरोही। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के सिरोही पहुंचने पर फूलों से स्वागत करते हुए ब्र.कु.बिन्दु साथ में हैं ब्र.कु.भूपाल तथा अन्य।

समस्तीपुर। शिवजयंति पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ.दशरथ तिवारी, ब्र.कु.रानी, ब्र.कु.अरूणा, ब्र.कु.कृष्णा तथा अन्य।

शाहादा। पॉलीटेकनिक कॉलेज के एच.ओ.डी.को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.भारती।

नवापारा, राजिम। 'सर्वधर्म सम्मेलन' को संबोधित करने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं गुरूशरण जी महाराज, प्रज्ञानंद, स्वामी आनंद चैतन्य, डॉ.स्वामी प्रेमानंद, ब्र.कु.पुष्पा तथा अन्य।

सीवान। शिवरात्रि के शुभ अवसर पर 'कलश यात्रा' को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए विधायक व्यासदेव प्रसाद, रजिस्ट्रार प्रो.तपस्विनी सिन्हा, ब्र.कु.सुधा तथा अन्य।

लुधियाना। शिव ध्वजारोहण करने के पश्चात् प्रभु स्मृति में खड़ें हैं सी.एम.ओ.सुभाष बत्ता, ब्र.कु.सरस तथा अन्य।